रुचिरा

द्वितीयो भागः

सप्तमवर्गाय संस्कृतपाठ्यपुस्तकम्

Class - VII

Subject - Sanskrit

DATE 01.07.2020
PAGE NO.:

प्रथमः पाठः - सुभाषितानि

श्लोक 1. पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

अन्वयः पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि सन्ति जलम् अन्नं सुभाषितम् ।
किन्तु मूढजनाः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥

व्याख्या- इस पृथ्वी पर तीन ही रत्न है- जल, अन्न और मीठीवाणी। किन्तु मूर्ख लोग पत्थर के टुकड़ों को ही रत्न कहते हैं। अर्थात् मूर्ख लोग हीरा, पन्ना, माणक, मोती आदि नौ रत्न को ही रत्न समझते हैं।

श्लोक 2. सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सत्येन वाति वायुश्च सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् ॥

अन्वयः पृथ्वी सत्येन धार्यते रविः सत्येन तपते, वायुः सत्येन वाति च (अतः) सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम् (अस्ति)।

व्याख्या सत्य से (सत्य के द्वारा) पृथ्वी धारण की जा रही है, सूर्य सत्य से तप रहा है और सत्य के द्वारा ही हवा बह रही है सभी सत्य में ही समाहित है।

श्लोक 3. दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये ।
विस्मयो न हि कर्त्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ।

अन्वयः दाने तपसि शौर्ये विज्ञाने विनये नये च विस्मयः न हि कर्तव्यः (यतोहि) वसुधायां बहुरत्ना (सन्ति)।

Teacher's Signature

व्याख्या- दान, तपस्या, वीरता, विज्ञान, विनय और नीति सभी अनेक रत्न इस पृथ्वी में स्थित है इसलिए मनुष्य को आश्चर्य नही करना चाहिए। ये पृथ्वी इन सभी गुणों से युक्त मनुष्यों से युक्त है।

श्लोक 4. सद्भिरेव सहासीत सद्भि कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्रीं च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥

अन्वय: (जनान) सद्भि सह एव आसीन सद्भि सह एव संङ्गति करणीयः असद्भिः सह कदापि न मैत्री करणीय न च विवाद करणीय सदा सद्भि सह आचरेत् ॥

व्याख्या मनुष्य को हमेशा सज्जन व्यक्ति के साथ ही रहना चाहिए। उनसे ही मित्रता रखनी चाहिए। दुष्टों के साथ न ही मित्रता करनी चाहिए और न ही विवाद करना चाहिए। सज्जनों की संगति में रहकर वैसा ही आचरण करना चाहिए।

श्लोक 5. धनधान्यप्रयोगेषु विद्याया संग्रहेषु च ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥

अन्वय: धनधान्य प्रयोगेषु विद्याया संग्रहेषु आहारे व्यवहारे य जन लज्जा त्यज्यति सः सुखी भवति ।

व्याख्या जो लोग धन कमाने, अनाज का प्रयोग करने, विद्या का संग्रह अर्थात् ज्ञान बढाने में, भोजन करने मे और किसी के साथ व्यवहार करने में लज्जा का अनुभव नहीं करते है वे सुखी रहते है।

व्याख्या- दान, तपस्या, वीरता, विज्ञान, विनय और नीति रूपी अनेक रत्न इस पृथ्वी में स्थित हैं इसलिए मनुष्य को आश्चर्य नहीं करना चाहिए। ये पृथ्वी इन सभी गुणों से युक्त मनुष्यों से युक्त है।

श्लोक 4. सद्भिरेव सहासीत सद्भि कुर्वीत सङ्गतिम् ।
सद्भिर्विवादं मैत्री च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ॥

अन्वयः (जनान्) सद्भि सह एव आसीन सद्भि: सह एव संङ्गति करणीयः असद्भि: सह कदापि न मैत्री करणीय न च विवादं करणीय सदा सद्भि: सह आचरेत् ॥

व्याख्या मनुष्य को हमेशा सज्जन व्यक्ति के साथ ही रहना चाहिए। उनसे ही मित्रता रखनी चाहिए। दुष्टों के साथ न ही मित्रता करनी चाहिए और न ही विवाद करना चाहिए। सज्जनों की संगति में रहकर वैसा ही आचरण करना चाहिए।

श्लोक 5. धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ॥

अन्वयः धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु आहारे व्यवहारे च जनः लज्जा त्यज्यति सः सुखी भवति।

व्याख्या जो लोग धन कमाने, अनाज का प्रयोग करने, विद्या का संग्रह अर्थात् ज्ञान बढाने में, भोजन करने में और किसी के साथ व्यवहार करने में लज्जा का अनुभव नहीं करते हैं वे सुखी रहते हैं।

श्लोक 6. क्षमावशीकृतीलोके क्षमया किं न साध्यते।
शान्तिखड्गः करे यस्य किं करिष्यति दुर्जनः॥

अन्वयः (अस्मिन्) लोके क्षमा वशीकृती अस्ति क्षमया सर्वं साध्यते यस्य करे शांतिखड्गः (अस्ति) (तस्य) दुर्जनः किं करिष्यति।

व्याख्या इस संसार में क्षमा रूपी हथियार सभी को वश में करने की शक्ति रखता है। क्षमा से सभी कार्य पूरे हो जाते है जिसके पास शांतिरूपी तलवार है उसका शत्रु भी कुछ नहीं कर सकता है। शान्त व्यवहार और क्षमा से सभी कार्य सिद्ध हो जाते है कोई भी हमारा शत्रु नही बनता।

शब्दार्थ:

1. पृथिव्याम् - धरती पर
2. सुभाषितम् - सुन्दर वचन
3. मूढैः - मूर्खो के द्वारा
4. पाषाणखण्डेषु - पत्थर के टुकडों में
5. रत्नसंज्ञा - रत्न का नाम
6. विधीयते - समझा जाता है
7. धार्यते - धारण किया जाता है

Teacher's Signature

8. तपते - जलता है
9. वाति - बहता है
10. वायुश्च - पवन
11. प्रतिष्ठितम - स्थित है
12. तपसि तपस्या में
13. शौर्ये बल में
14. नये नीति में
15. विस्मय आश्चर्य
16. बहुरत्ना अनेक रत्नों वाली
17. वसुन्धरा पृथिवी
18. सद्भिरेव सज्जनों के साथ ही
19. सहासीत साथ रहना/बैठना चाहिए
20. कुर्वीत करना चाहिए
21. सद्भिर्विवादम् सज्जनों के साथ झगड़ा
22. क्षमावशीकृतिर्लोके संसार में क्षमा

Teacher's Signature

23.
24.
25.
26.
27.

प्रश्न 1.

प्रश्न 2.

उत्तर

23. नासद्भिः — असज्जन लोग

24. धनधान्यप्रयोगेषु — धनधान्य के प्रयोग में

25. संग्रहेषु — संग्रह (संचय) करने में

26. त्यक्तलज्जः — संकोच का त्याग

27. शान्तिखड्गः — शांति रूपी तलवार

अभ्यासः

प्रश्न 1. सर्वान् श्लोकान् सस्वरं गायत -

प्रश्न 2. यथा योग्यं श्लोकांशान् मेलयत -

उत्तर धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च ।
विस्मयो न हि कर्तव्यः बहुरत्ना वसुन्धरा ।
सत्येन धार्यते पृथ्वी सत्येन तपते रविः ।
सद्भिर्विवाद मैत्री च नासद्भिः किञ्चिदाचरेत् ।
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

Teacher's Signature

प्रश्न 3. एकपदेन उत्तरत –

(क) पृथिव्यां कति रत्नानि ?

उत्तर त्रीणि

(ख) मूर्खैः कुत्र रत्नसंज्ञा विधीयते ?

उत्तर पाषाणखण्डेषु

(ग) पृथिवी केन धार्यते ?

उत्तर सत्येन

(घ) कैः सङ्गतिं कुर्वीत ?

उत्तर सद्भिः

(ङ) लोके वशीकृतिः का ?

क्षमा

DATE 04/07/2020
PAGE NO.:

प्रश्न 4. रेखाङ्कितपदानि अधिकृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत -

क) सत्येन वाति वायुः ।

प्रश्न केन वाति वायुः ?

ख) सद्भिः एव सहासीत् ।

प्रश्न कैः एव सहासीत् ?

ग) वसुन्धरा बहुरत्ना भवति ।

प्रश्न का बहुरत्ना भवति ?

घ) विद्यायाः संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

प्रश्न कस्याः संग्रहेषु त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ?

(ङ) सद्भिः मैत्रीं कुर्वीत ।

प्रश्न सद्भिः कां कुर्वीत ?

Teacher's Signature

प्रश्न 5. प्रश्नानामुत्तराणि लिखत –

क) कुत्र विस्मयः न कर्तव्यः ?

उत्तर दाने तपसि शौर्ये च विज्ञाने विनये नये।
विस्मयो न हि कर्तव्यो बहुरत्ना वसुन्धरा ॥

ख) पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि कानि ?

उत्तर पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम ।

ग) त्यक्तलज्जः कुत्र सुखी भवेत् ?

उत्तर धनधान्यप्रयोगेषु विद्यायाः संग्रहेषु च
आहारे व्यवहारे च त्यक्तलज्जः सुखी भवेत् ।

DATE 06.07.2020
PAGE NO.

द्वितीयः पाठः

दुर्बुद्धिः विनश्यति

कथायाः सारं

एक समय मगधदेश में फुल्लोत्पल नाम तालाब होता है। वहाँ संकट-विकट नाम के दो हंस रहते हैं। कम्बुग्रीव नामक उन दोनों का एक मित्र कछुआ भी वहीं रहता था। एक बार वहाँ कुछ मछुआरे आये। वे कहने लगे कि, हम कल मछलियों और कछुओं को मारेंगे। यह सुनकर कछुए ने अपने मित्रों से पूछा कि मैं क्या करूँ? दोनों हंसों ने कहा- सुबह जो सही होगा वही करेंगे। तब कछुए ने कहा,- कुछ ऐसा करो जिससे मैं किसी दूसरे तालाब में चला जाऊँ। हंसों ने कछुए से पूछा तो हम क्या क्या करें? तो कछुए ने कहा- मैं तुम दोनों के साथ आकाशमार्ग से कहीं और जाना चाहता हूँ।

हंस इसका उपाय पूछते हैं तो कछुआ उपाय बताता है कि तुम दोनों एक लकड़ी को अपनी चोंच में पकड़ लेना मैं बीच में लटक जाऊंगा और फिर तुम दोनों अपने पंखों के बल से सुखपूर्वक उड़ जाना। हंसों ने कहा कि यह उपाय सही है पर हम दोनों के द्वारा तुम्हें ले जाते हुए देखकर लोग कुछ ना कुछ बोलेंगे ही यदि तुम उत्तर दोगे तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है। इसलिए यहीं रहो। कछुआ कहता है मैं मूर्ख नहीं मैं उत्तर नहीं दूंगा, कुछ नहीं बोलूंगा इसलिए जैसा मैं कहता हूँ वैसा करो।

इसप्रकार लकड़ी पर लटके हुए कछुए को देखकर मछुआरे पीछे दौड़ते हुए बोलते हैं कि अरे आश्चर्य है हंसों के साथ कछुआ भी उड़ रहा है। कोई कहता है यदि कछुआ कैसे भी करके गिर जाए तो मैं पकाकर खाऊंगा। कोई दूसरा कहता है, कि तालाब के तट पर पकाकर जलाकर खाऊंगा, कोई कहता है कि

Teacher's Signature

घर ले जाकर खाऊंगा। उनके इन वचनों को सुनकर कछुआ क्रोधित हो जाता है। मित्रों को दिया हुआ वचन भूलकर बोल जाता है → तुम सब राख खाओगे। उसी समय कछुआ लकड़ी से भूमि पर गिर जाता है। उसको मछुआरे मार देते हैं।
इसलिए कहा गया है कि –

"जो अपने मित्रों की, भलाई के लिए कही गई बात नहीं मानता है वह इस कछुए की तरह ही लकड़ी से गिर कर मर जाता है।"

शब्दार्थ:

1. सरः - तालाब
2. कूर्मः / कच्छपः - कछुआ
3. प्रतिवसति स्म - रहता था
4. धीवराः / पौराः - मछुआरे
5. मत्स्यकूर्मादीन् - मछली कछुआ आदिको
6. मारयिष्यामः - मारेंगे
7. नैवम् - ऐसा नहीं
8. ह्रदम् - तालाब को
9. धारयतम् - धारण करे
10. पक्षबलेन - पंखों के बल से
11. अपायः - हानि
12. नीयमानम् - ले जाते हुए
13. अवलोक्य - देखकर
14. लम्बमानम् - लटकते हुए
15. उड्डीयते - उड़ रहा है

Teacher's Signature

DATE 03/07/2020
PAGE NO.:

16. विस्मृत्य - भूलकर
17. भस्म - राख
18. सुहृदाम् - मित्रों
19. हितकामानाम् - कल्याण की इच्छा रखने वाले का/के/की
20. अभिनन्दति - प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार करता है
21. दुर्बुद्धिः - दुष्ट बुद्धि वाला (मूर्ख)

अभ्यासः

प्रश्न 2. एकपदेन उत्तरत –

क) कूर्मस्य किं नाम आसीत् ?
उत्तर कम्बुग्रीवः

ख) सरस्तीरे के आगच्छन् ?
उत्तर धीवराः

ग) कूर्मः केन मार्गेण अन्यत्र गन्तुम् इच्छति ?
उत्तर आकाशमार्गेण

घ) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा के अधावन् ?
उत्तर पौराः / धीवराः

Teacher's Signature

प्रश्न 5. पूर्णवाक्येन उत्तरत् –

क) कच्छपः कुत्र गन्तुम् इच्छति ?
उत्तर कच्छपः अन्यत्र गन्तुम् इच्छति ।

ख) कच्छपः कम् उपायं वदति ?

ग) लम्बमानं कूर्मं दृष्ट्वा पौराः किम् अवदन् ?
उत्तर पौराः अवदत् – "हहो महदाश्चर्यम्। हंसाभ्यां सह कूर्मोऽपि उड्डीयते ।"

घ) कूर्मः मित्रयोः वचनं विस्मृत्य किम् अवदत् ?
कूर्म अवदत् – "यूयं भस्म खादत ।"

तृतीयः पाठः - स्वावलम्बनम्

अनुवाद:

1. कृष्णमूर्तिः श्रीकण्ठश्च ---- साधारणञ्च आसीत्

अनुवाद कृष्णमूर्ति और श्रीकण्ठ दो मित्र थे। श्रीकण्ठ के पिता धनवान थे। इसलिए उसके भवन में सभी प्रकार के सुख के साधन थे। उस विशाल भवन में चालीस खंभे थे। उसके अठारह कमरों में पचास खिड़कियां (पच्चास) चौवालिस दरवाजे 36 (छत्तीस) पखे थे। वह दस नौकर लगातार काम करते रहते थे। परन्तु कृष्णमूर्ति के माता-पिता एक गरीब किसान पति-पत्नी थे। उसका घर दिखावे से विहीन और साधारण था।

2. एकदा श्रीकण्ठः ---- "सन्ति।"

अनुवाद एक बार श्रीकण्ठ उसके साथ सुबह नौ बजे उसके घर गया। वह कृष्णमूर्ति और उसके माता-पिता ने श्रीकण्ठ का आतिथ्य (आवभगत)-(खोतकारी) अपनी श्रद्धा के अनुसार की। यह देखकर श्रीकण्ठ ने कहा "दोस्त मैं तुम्हारे सत्कार से सन्तुष्ट हूँ। केवल इतना ही दुःख है कि तुम्हारे घर में एक भी नौकर नहीं है। मेरे सत्कार में आपको बहुत कष्ट हुआ। मेरे घर पर तो बहुत सारे नौकर हैं।

3. तदा कृष्णमूर्तिः अवदत् ---- गृहं चलामि।

अनुवाद तब कृष्णमूर्ति ने कहा - "मित्र! मेरे आठ नौकर हैं वे हैं मेरे दो हाथ, दो पैर, दो आँखे, दो कान। ये हर समय

Teacher's Signature

मेरी सहायता करते है। किन्तु तुम्हारे नौकर हमेशा और सभी जगह उपस्थित नहीं हो सकते है। तुम तो अपने कामो के लिए नौकरो पर आश्रित हो। जब जब वे अनुपस्थित होते है तब तब तुम्हें कष्ट का अनुभव होता है। स्वावलम्बन में हमेशा सुख ही है कभी भी कष्ट नही होता है।"

श्रीकण्ठ ने कहा - "मित्र। तुम्हारे वचन सुनकर मेरा मन बहुत प्रसन्न हुआ। अब मैं भी अपने सभी काम स्वयं ही करना चाहता हूं।" अच्छा, सोढ़ बारह बज गए अब मैं घर चलता हूँ।

शब्दार्थः

समृद्धः - धनी

चत्वारिंशत - चालीस

अष्टादश - अट्ठारह

प्रकोष्ठेषु - कमरों में

पञ्चाशत् - पचास

गवाक्षाः - खिड़कियाँ

चतुश्चत्वारिंशत् - चवालीस

षट्त्रिंशत् - छत्तीस

Teacher's Signature

र नौकर हमेशा
सकते हैं। तुम तो
यत हो। जब जब
ष्ट का अनुभव
ही है कभी भी कष्ट

न सुनकर मेरा मन
अपने सभी काम
ढ़े बारह बज

कृषकदम्पती - किसान पति-पत्नी

आतिथ्यम् - अतिथि-सत्कार

कर्मकर: - काम करने वाला

भवताम् - आपके

भृत्य: - नौकर / सेवक

शक्नुवन्ति - सकते हैं

सार्धद्वादशवादनम् - साढ़े बारह बजे

साम्प्रतम् - अभी / वर्तमान में / अब

अभ्यास प्रश्ना:

प्रश्न 2. अधोलिखितानां प्रश्नानामुत्तराणि लिखत -

क) कस्य भवने सर्वविधानि सुखसाधनानि आसन् ?
उत्तरम् श्रीकण्ठस्य भवने

ख) कस्य गृहे कोऽपि भृत्य: नास्ति ?
उत्तरम् कृष्णमूर्ते:

ग) श्रीकण्ठस्य [redacted] आतिथ्यम् के अकुर्वन् ?
उत्तरम् कृष्णमूर्ति तस्य माता-पिता च

घ) सर्वदा कुत्र सुखम् ?
उत्तरम् स्वावलम्बने

ङ) श्रीकृष्णः कृष्णमूर्ते गृहं कदा अगच्छत् ?
उत्तरम् प्रातः नववादने

च) कृष्णमूर्तेः कति कर्मकराः सन्ति ?
उत्तरम् अष्ट

19/08

चतुर्थः पाठः - 'हास्यबालकविसम्मेलनम्'

शब्दार्थाः

1. अधः - नीचे
2. कोलाहलम् - शोर
3. काव्यहन्तारः - काव्य को नष्ट करने वाले
4. कालयापकाः - समय बर्बाद करने वाले
5. धुरन्धराः - अग्रणी, श्रेष्ठ
6. एहि - आइए
7. करतलध्वनिना - तालियों से
8. अरसिकेभ्यः - नीरस जनों को

Teacher's Signature

9. स्वकीयम् = अपने

10. मादृशाः - मेरे जैसे

11. हस्तलाघवम् - हाथ की सफाई

12. तुन्दस्य - तोंद के

13. आवर्तयन् - फेरता हुआ

14. धार्यताम् - धारण करें

15. परान्नम् - दूसरों के अन्न को

16. पौष्टिकः - पुष्टि देने वाला

17. प्रत्यर्पणम् - लौटाना

18. अवशिष्टम् - बचा हुआ शेष

19. उत्प्रेरितः - प्रेरित होकर

20. श्रावयति - सुनाता है

21. भोज्यलोलुपम् - खाने का लोभी

Teacher's Signature

अभ्यास-प्रश्नः

प्रश्न 5. अधोलिखितानां प्रश्नानाम् उत्तराणि एकपदेन लिखत-

क) मञ्चे कति बालकवयः उपविष्टाः सन्ति ?
उत्तरम् चत्वारः

ख) के कोलाहलं कुर्वन्ति ?
उत्तरम् श्रोतारः

ग) गजाधरः कम् उद्दिश्य काव्यं प्रस्तौति ?
उत्तरम् वैद्यम् उद्दिश्य

घ) तुन्दिलः कस्य उपरि हस्तम् आवर्तयति ?
उत्तरम् तुन्दस्य उपरि

ङ) लोके पुनः पुनः कानि भवन्ति ?
उत्तरम् शरीराणि

च) किं कृत्वा घृतं पिबेत् ?
उत्तरम् ऋणं

Teacher's Signature

DATE: 3/09/
PAGE NO.:

पञ्चम पाठः -

पण्डिता रमाबाई

अभ्यासप्रश्नाः

क 'पण्डिता' 'सरस्वती' इति उपाधिभ्यां का विभूषिता ?

उत्तरम् रमाबाई

ख रमा कुतः संस्कृतशिक्षां प्राप्तवती ?

उत्तरम् स्वमातुः

ग) रमाबाई केन सह विवाहम् अकरोत् ?

उत्तरम् विपिनबिहारीदासेन सह

घ) कासां शिक्षायै रमाबाई स्वकीयं जीवनम् अर्पितवती ?

उत्तरम् नारीणां

ङ) रमाबाई उच्चशिक्षार्थं कुत्र अगच्छत् ?

उत्तरम् इंग्लैण्डदेशं

Teacher's Signature

2. प्रश्न रेखाङ्कितपदानि आधृत्य प्रश्ननिर्माणं कुरुत

क) रमायाः पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत्।

प्रश्न कस्याः पिता समाजस्य प्रतारणाम् असहत् ?

ख) पत्युः मरणानंतरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत्।

प्रश्न कस्य मरणानन्तरं रमाबाई महाराष्ट्रं प्रत्यागच्छत् ?

ग) रमाबाई मुम्बईनगरे 'शारदा-सदनम्' अस्थापयत्।

प्रश्न रमाबाई कुत्र शारदा सदनम् अस्थापयत् ?

घ) 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे रमाबाई महोदयायाः निधनम् अभवत्।

प्रश्न 1922 तमे ख्रिष्टाब्दे कस्याः निधनम् अभवत् ?

ङ) स्त्रियः शिक्षां लभन्ते स्म।

प्रश्न काः शिक्षां लभन्ते स्म ?

प्रश्न 3. प्रश्नानामुत्तराणि लिखत -

क) रमाबाई किमर्थम् आन्दोलनं प्रारब्धवती ?

उत्तरम् रमाबाई स्त्रीणां कृते वेदादीनां शास्त्राणां शिक्षायै आन्दोलनं प्रारब्धवती ।

ख) निः सहायाः स्त्रियः आश्रमे किं किं लभन्ते स्म ?

उत्तरम् निः सहायाः स्त्रियः मुद्रण - टङ्कण - काष्ठकलादीनाञ्च प्रशिक्षणमपि लभन्ते स्म ।

ग) कस्मिन् विषये रमाबाई महोदयायाः योगदानम् अस्ति ?

उत्तरम् रमाबाई महोदयायाः समाजसेवाः अतिरिक्तं लेखनक्षेत्रे अपि महत्वपूर्णम् योगदानम् अस्ति ।

घ) केन रचनाद्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते ?

उत्तरम् 'स्त्रीधर्मनीति' 'हाई कास्ट हिन्दू विमेन' इति रचनाद्वयेन रमाबाई प्रशंसिता वर्तते ।